लक्षणा शक्ति –

Dr. Uma Gallery
Skt. Deptt.
III Yr. Content

काव्य के सम्यक् अर्थ का अवबोध शब्द की वृत्तियों के जाने बिना नहीं हो सकता। 'वृत्ति' का दूसरा नाम व्यापार भी है। इन शब्दवृत्तियों को शब्द शक्ति भी कहा जाता है। इन शब्द-शक्तियों द्वारा शब्द में निहित अर्थ का अधिगम भी होता है।

साहित्य-दर्पण में तीन शब्द-वृत्तियों का संग्रह इस प्रकार किया गया है – 'अर्थो वाच्यश्च लक्ष्यश्च व्यंग्यश्चेति त्रिधा मतः। वाच्योऽर्थो अभिधया बोध्यो लक्ष्यो लक्षणया मतः। व्यंग्यो व्यञ्जनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्य शक्तयः॥ (साहित्य-दर्पण – 2/2-3)

लक्षणा शक्ति द्वारा अर्थ का बोध करानेवाला शब्द 'लाक्षणिक' है, उस शब्द से जिस अर्थ का बोध होता है, वह 'लक्ष्यार्थ' कहा जाता है।

शब्द की इस दूसरी शक्ति को मम्मट ने अपने काव्यप्रकाश में परिभाषित करते हुए बताया –

'मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणाऽऽरोपिता क्रिया॥
(काव्यप्रकाश – 2/9)

विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसके स्वरूप का उल्लेख इस प्रकार किया – मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते। रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता'॥ (विश्वनाथ)

अर्थात् किसी वाक्य को सुनकर जब मुख्य अर्थ युक्तिसंगत न लगे अर्थात् उसका बाध हो जाए तो जिस दूसरी शब्दशक्ति से उससे सम्बद्ध अन्य अर्थ समझ में आता है तो वह लक्षणा है। यह रूढि या लोकप्रसिद्धि अथवा प्रयोजन के उद्देश्य से जिस शक्ति द्वारा समझा जाता है, शब्द की

उस वृत्ति को लक्षणा कहते हैं। रूढ़ि का अर्थ किसी शब्द की व्युत्पत्ति आदि से प्राप्त होने वाले अर्थ के अतिरिक्त अर्थ में लोकपरम्परा से प्रसिद्धि है। यथा - 'कलिङ्ग साहसिकः' इस वाक्य में 'कलिंग' शब्द का कोशादि से प्राप्त होनेवाला अभिधेयार्थ एक देश-विशेष है, जिसको लेने पर इस का अन्वय नहीं हो पाता है, क्योंकि कोई भी देश जाने स्थान आदि होता है और इसमें चेतन प्राणी का धर्म 'साहस' आदि का होना संगत नहीं माना जा सकता है। अतः उपर्युक्त वाक्य में 'कलिंग' शब्द अपने देशरूप मुख्यार्थ को छोड़कर लोकप्रसिद्धि (रूढ़ि) से अपने निवासियों का बोध करवाता है। यहाँ पर यह प्रसिद्धि हेतु है।

दूसरा उदाहरण - गंगायां घोषः - गंगा में घर। गंगा में घर जलप्रवाह के कारण संभव नहीं है; अतः यहाँ मुख्यार्थ का बाध होकर 'गंगा' शब्द के लिए लक्षणा-वृत्ति का आश्रय कर, इससे संबंधित 'गंगा के जलप्रवाह का तट' यह अर्थ बोधित होगा। इस वाक्य में लक्षणा का हेतु 'प्रयोजन' है।

एक अन्य उदाहरण पद्य रूप में भी प्रस्तुत किया गया है - 'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते? सुजनता प्रथिता भवता परम्। विदधदीदृशमेव सदा सखे! सुरिवतामस्त ततः शरदां शतम्॥

यह अपने किसी 'अपकारी' मित्र के प्रति उक्ति है - 'हे मित्र! तुमने मेरे साथ बहुत उपकार किया है, इस विषय में क्या कहा जा सकता है? तुम्हारी सज्जनता सब ओर फैल गयी है। बस, ऐसा ही करते हुए सौ साल सुख से जीते रहो'

यहाँ मुख्यार्थ का बाध होने पर विपरीत संबंध से उन्हीं वाक्यों का 'अपकार' करनेवाला अर्थ प्रकट होता है। यहाँ सीधे कहने पर कथ्य प्रभावशाली नहीं होगा।

(Contd.)

Scanned with CamScanner